सौंदर्यशास्त्र का परिचय

एस्थेटिक्स शब्द यूनानी भाषा से लिया गया है | जिसका मूल रूप atontikos है , यही यूनानी शब्द बाद में एस्थेसिस हुआ, जिसका अर्थ है- इंद्रिय सुख की चेतना (sense happy conscious)| इसी शब्द से Aesthetics शब्द प्रचलित हुआ | पाश्चात्य साहित्य में सबसे पहले बाउमगार्टन ने 1750 ई० में कला सौन्दर्य के लिए एस्थेटिक्स शब्द का प्रयोग किया | अलेक्जेंडर बाउमगार्टन (alexander baumgarten – 1714-62) ने अपनी पुस्तक Aesthetica (1750 ई०) के प्रथम अनुच्छेद में "ऐन्द्रिय संवेदनाओं का विज्ञान" कहकर परिभाषित किया है | इन्होने इस विषय को स्वतंत्र विषय के रूप में मान्यता दिलाई | Aesthetics विषय को पहले दर्शनशास्त्र (philosophy) के लिए प्रयोग किया जाता था | सुकरात (socreteis), प्लेटो, अरस्तु (Aristotal) जैसे महान शास्त्रियों ने दर्शनवादी विचारधारा में अपना योगदान दिया है |

- सम्पूर्ण विश्व विराट रूप देखकर विचार और भावो की जो तीव्रता मन में जाग्रत होती है, उसका एक ही आधार होता है और वह है “सौंदर्य” | सौंदर्य सम्पूर्ण जड़- चेतन में समाया है | इस सौन्दर्य का अनुभव विश्व का प्रत्येक प्राणी करता है | सौंदर्य की अनुभूति में इन्द्रियां (नेत्र, कान, नासिका, जिह्वा, त्वचा) तथा मानसिक संपर्क सहायक होतें हैं |
- सौदर्य शास्त्र कला की शास्त्रीय रूप से प्रशंसा करना है | इसे नन्दनतत्व, नंदन शास्त्र अथवा सौंदर्य बोध भी कहा जाता है | Aesthetics का अर्थ प्राच्य (पूर्वी) तथा पाश्चात्य विद्वानों ने अनेक प्रकार से किया है | बाउमगार्टन ने इसका प्रयोग संवेदनशील ऐन्द्रिय बोध के शास्त्र के अर्थ में किया है | हीगल ने “The philosophy of fine arts” में एस्थेटिक्स का अर्थ ललित कलाओं के दर्शन के अर्थ में किया है | बाद में इसका प्रयोग काव्य अथवा प्रकृति का सौन्दर्यबोध के अर्थ में होने लगा | आधुनिक काल में इसका प्रयोग सौन्दर्यानुभूति अर्थात ललित कलाओं के तत्वों का सैद्धांतिक निरूपण और इसके आधार पर कलाकृतियों का मूल्यांकन के अर्थ में हो रहा है |

- Encyclopedia Britanica में एस्थेटिक्स उस शास्त्र को कहा गया है, जो इंद्रिय बोध से प्राप्त सौंदर्य भावना के मनोमय आनंद का विश्लेषण करता है |
- के० एस० रामास्वामी शास्त्री ने माना है – Aesthetics is the science of beauty as expressed in Art. (सौंदर्यशास्त्र कला में अभिव्यक्त सौंदर्य का विज्ञान है |)
- क्रोचे तथा हीगल का मत है – सौंदर्य शास्त्र ललित कलाओं का विज्ञानं व दर्शन है |
- के०सी० पाण्डेय ने भी हीगल के मत का समर्थन किया है |
- सौंदर्य अपरिमित है और अभिव्यक्ति परिमित होती है | कालिदास ने सौंदर्य की गहनता के गूढ़ भाव को अपने शब्दों में कहा है – **"तथापि तत्या लावण्यं रेखया किन्चिदन्वितत्"** अर्थात लावण्य अपरिमित सौंदर्य को रेखा द्वारा चित्र में किंचित ही दिखाया जा सकता है | कोई भी कलाकार लावण्य को सम्पूर्ण रूप से अभिव्यक्त नहीं कर सकता |

- सौंदर्य स्वतः ही प्रकट होता है, इसका आलोक इतना व्यापक होता है की वह दिखाया नही जा सकता | अँधेरे में रखा हीरा स्वयं को प्रकाशित करता है, वस्त्र में लिपटी कस्तूरी स्वयं से सुगंध को फैलाती है | इसी प्रकार पवित्र भावों वाला ह्रदय अपने चेहरे पर एक पावन सौंदर्य, आलोक, आकर्षण तथा प्रभाव व्यक्त करता है | विश्व के प्रयेक गुप्त व सुप्त सौन्दर्य को कलाकार ही अभिवयक्ति देता है | कला में सौंदर्य और आनंद सामान रूप से प्रतिष्ठित होते हैं |

समै समै सुन्दर सबै, कुरूप न कोई |
मन की रूचि जेती जितै, तित तेती रूचि होय ||

- सभी वस्तुएं मन की स्थिति के अनुसार सुन्दर होती हैं | सभी कलाओं का अंतिम लक्ष्य वस्तुतः इसकी आनंद्नुभूति करना ही है और यह रस कवि की या कलाकार की सहायता के अनुसार ढल जाता है | मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं को कलाकार अपने अनुभव से अंकित करता है जैसे प्रतीक आदि |

- Savanna Hypothesis and Gordon Orians के अनुसार – Habitual facts (आदत) के कारण भी Aesthetics का अनुभव किया जा सकता है|
- The National Committee for standards in the Art Education (1994) के अनुसार – एस्थेटिक्स एक दर्शन (philosophy) की शाखा है जो सुन्दरता, कला और प्रकृति में विशेष ध्यान देता है और उसके प्रक्रिया से मानवीय संवेदनाएं और प्रतिक्रिया से सम्बन्ध रखता है |
- अरस्तु के अनुसार – सौंदर्य आकांक्षा, वासना और उपयोगिता से ऊपर की वास्तु है | (beauty is a thing above desire, lust and utility)
- बाउमगार्टन ने – प्रकृति के अनुकरण को ही सौंदर्य सृजन कहा है (the imitation of nature is called beauty creation) |
- कांट और रस्किन – सौंदर्य इश्वर की अनुभूति है (beauty is God.) |

भारतीय विचारको का मत

- भारतीय विचारकों की दृष्टि में सौंदर्य का विशेष महत्त्व रहा है, जो चारूत्व (charity), रमणीयता (elegance), शोभा (grace), क्रांति (revolution), चमत्कार (miracle), वैचित्य (legality), वक्रता (curvature) आदि नामों से द्रष्टिगत होता है | भारतीय मनीषियों ने सौंदर्य की चर्चा वेदों और ग्रंथों में विस्तृत रूप से किया है | ऋषियों द्वारा वर्णित सौंदर्य परम तत्व का सौंदर्य है, जिसे प्रकृति और मानव दोनों में देखने को मिलता है |
- कालिदास के अनुसार – परम सौंदर्य की निर्मिती मानसिक सहज ज्ञान से संभव है |
- भावभूति के अनुसार – सौदर्य विलक्षण एवं अतुलनीय है |
- तुलसीदास जी ने - सौंदर्य को अतुलनीय, विलक्षण और पूर्ण माना है |
- बिहारी- सौंदर्य को किसी सीमा में बांधकर नही रखा जा सकता है, सौन्दर्य मन की रूचि के अनुसार कम या अधिक अनुभव किया जा सकता है |

धन्यवाद